धोरा धरती राजस्थान रा लिछमी-पुत्र

श्री जुगलकिशोर बिड़ला

श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार

श्री कमलापत सिंघानिया

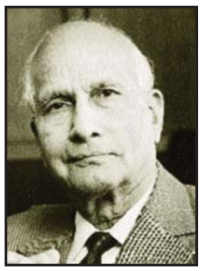
श्री घनश्यामदास बिड़ला

श्री जमनालाल बजाज

श्री प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका

श्री साहू शांतिप्रसाद जैन

श्री आनंदीलाल पोद्दार

श्री मंगतूराम जैपुरिया

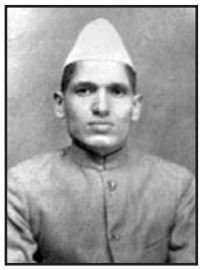
श्री सीताराम सेक्सरिया

श्री भागीरथ कानोड़िया

श्री राम मनोहर लोहिया

— डॉ. सोहनराज तातेड़

देश-विदेश मांय उद्योग-व्यवसायां रै पाण नीं जाणै कित्ता धोरा धरती रा लिछमी पुत्र राजस्थान रौ नांव ऊंचौ कर्‌यौ! दरअसल राजस्थान रा जाया-जलम्या अर राजस्थान मूळ रा वौपारियां री औद्योगिक साहसिकता जग-चावी है। देश रा सगळा प्रांतां अर केई बारला देश में वौपार में आगीवाण हुवण अर औद्योगिक इकाइयां री थापना रौ जस इणी समुदाय नै है। छोटी-छोटी गद्दियां सूं सरू करीजी इणां री व्यावसायिक जात्रा देश रै निजी छेत्र रा आधै सूं बेसी आरथिक साधनां माथै आधिपत्य जमावती थकी अंतरराष्ट्रीय स्तर तांई जाय पूगी है। भारत रै आरथिक इतिहास मांय तौ इणां नवा कीरतमान थापन कर्‌या ई है, साथै ई इण परंपरागत उद्योगां सूं परिष्कृत उद्योगां मांय प्रवेस कर'र अमेरिका, इंग्लैंड, जापान, आस्ट्रेलिया, जर्मनी अर केई यूरोपीय देसां रै बजारां मांय थरपित हुय चुक्या है। इण भांत राजस्थान रा लिछमी-पुत्रां री धाक आज आखै देश मांय ई नीं, आखी दुनिया मांय है। अैड़ी बात नीं है के देश रै दूजै प्रदेश मांय अथवा विदेशां मांय व्यवसायी जातियां पैदा नीं हुवती हुवै, पण राजस्थान री व्यवसायी जातियां री आपरी न्यारी निकेवळी जैविक खासियतां है अर वां खासियतां रै पाण ई वै आपरी सफळतावां रा झंडा दुनिया भर मांय गाड्या है। राजस्थान रै लिछमी-पुत्रां री व्यावसायिक प्रतिभा सौ बरसां पैला जाब चार्नेक रै इण सबदां में उजागर हुयी— ''हिंदुस्तान मांय अेक मारवाड़ी जाति इज अैड़ी है, जिकी दूजी सगळी ई जातियां री तुलना में वाणिज्य-वौपार मांय खास दक्ष अर ईमानदार है। कंपनी (ईस्ट इंडिया कंपनी) चावै तौ मारवाड़ी जाति रौ सैयोग प्राप्त कर'र आपरै वौपार रौ बेसी सूं बेसी फैलाव कर सकै!'' उल्लेखजोग बात आ है के 'ईस्ट इंडिया कंपनी' इणी मारवाड़ी प्रतिभा रौ उपयोग करती थकी आपरौ व्यवसाय पूरै देश मांय फैलायौ।

भारत रै मानचित्र मुजब जे भारतमाता रै सरूप री कल्पना करां तौ राजस्थान हिवड़ै रै हार जिसौ लखावै। हिम मंडित मुगट अर पग पखाळतै सागर रै बिचाळै राजस्थान री वीरप्रसू धरा सही रूप में भारतमाता री हिरदैस्थळी-सी लागै। प्राचीन काल सूं लगायनै आज दिन तांई आ धरती भारतीय संस्कृति री ठावी ठौड़ रह्यी। संसार में अनेकूं राज आया अर गया। केई धरम उग्या अर अस्त हुया। मोकळी संस्कृतियां बणी अर बिगड़ी, पण भारतीय संस्कृति रौ मूळ सरूप आज दिन तांई अठै सागण रूप में कायम रह्यौ। इणरौ मूळ कारण इण संस्कृति सागै इण धरती री वै खूबियां है, जिकौ मानव मात्र रै कल्याण री कामना करै अर मानखै रै उदात्त चरित्र रौ निरमाण करै।

इणी सबळी अर सोवणी संस्कृति रा दरसण परतख रूप में आज तांई अठै होवै। इणरै लारै भलां ई भांत-भांत रा भौगोलिक अर सामाजिक कारण रह्या हुवौ, पण आ बात सोळूं आना साची के भारतीय संस्कृति रा उदात्त गुण आज ई राजस्थानवासियां में बोहळाई सूं देखण नै मिळै। मायड़भोम खातर मर मिटण री कामना, प्राण देयनै ई वचनां री प्रतपाळणा, शरणागत री रक्षा, हिम्मत, गाढ, लगन अर ईमानदारी जिसा देव दुरलभ गुण अठै रा मानखै री रग-रग में समायोड़ा अर उणरै रगत रै कण-कण में रळियोड़ा है। इतिहास इण बात रौ साक्षी। अठै री नारी तौ भारतीयता री साक्षात् प्रतिमा। कवि रै सबदां में—

है सिंघणियां आज लग, निरवीजां घर नांह।
वंस उजाळक बाहुड़ी, मिळै झूंपड़ां मांह॥

कठोर जीवण अेक वरदान

इण प्रदेश रौ घणकरौ भाग मरुस्थळी होवण सूं दूजै भारतीय प्रदेशां सूं अठै रौ जीवण न्यारौ निरवाळौ। च्यारूंमेर फैल्योड़ा मोटा-मोटा धोरा, पाणी रौ तोड़ौ, आवागमन रै साधनां री अबखाई, हर बरस दुकाळ री मंडरावती काळी छिंया अर पेट-भराई रै साधनां रौ अंगां ई अभाव। इण कारणां सूं अठै रौ जीवण घणौ अबखौ, घणौ कठोर। दुरगम मरुस्थळी भू-भाग क पहाड़ी इलाकौ होवण रै कारण औ प्रदेश ठेट सूं मुल्क रै दूजै भागां सूं कट्योड़ौ न्यारौ ई रह्यौ। जैसलमेर जिसौ इलाकौ तौ उण वखत इतरौ अडवेळौ अर दुरगम गिणीजतौ के उठै तांई पूगणौ ई घणौ अबखौ काम मानीजतौ। कवि रै सबदां में—

घोड़ा जे व्है काठ रा, पिंड कीजै पाषाण।
लोह तणा व्है लूघड़ा, जद देखीजै जैसाण॥

डॉ. सोहनराज तातेड़

जैसलमेर देखण वास्तै साधारण सरीर सूं पूगणौ ई असंभव गिणीजतौ। उण वास्तै लकड़ी रै घोड़ै, पत्थर जिसै कठोर सरीर अर लोह सूं बणी पोसाक री जरूरत महसूस करीजती।

दूजी सुख-सुविधावां री तौ खैर बात छोड़ौ, पण जठै पीवण रौ पाणी ई दोरौ हाथ आवतौ, उठै री अबखाइयां रौ अंदाज सहज ई लगायौ जाय सकै। उन्हाळै में खैंखड़ करती लूवां अर तवै रै उनमान तप्योड़ी धरती। हरियाळी रा कठैई दरसण ई नीं। सैंकड़ां कोसां तांई पसर्‌योड़ौ मरुस्थळ अर उणमें अळगा-अळगा बस्योड़ा नेना-मोटा गांवड़ा अर ढाणियां। आवागमन रौ सै सूं तेज साधन ऊंठ, जिकौ खेती, सवारी अर माल लादण जिसै सगळै कामां में काम आवतौ।

इसौ अबखौ जीवण देख'र लागै जाणै अठै रैय'र किंया ई मिनखाजूण पूरी करणी है। दिन थोकड़ै देवणा है अर पशुवत् जीवण बितावणा है।

राजस्थान रै लिछमी-पुत्रां री सफळता रै लारै अप्रतख रूप सूं परंपरागत सामाजिक अर सांस्कृतिक मूल्य रैया। खास सामाजिक मूल्यां रै कारण इणां री दिनचर्या नियमित हुवती। अै सजातीय भाइयां री हरसंभव सहायता करता। आं रौ वैवार संयत अर दैनिक जीवण मितव्ययी रैवतौ। केई पाश्चात्य विद्वान स्वीकार्‌यौ है के सामाजिक व्यवस्था मारवाड़ियां री सफळता रौ आधार रैयी है। टिम्बर्ग रौ कैवणौ हौ के मारवाड़ियां रा खास गुण उणां नै आपस में सामाजिक स्हायता देवण अर आरथिक मदद करण रै अलावा शिक्षा, मनोरंजन आद री सुविधावां ई आपरै सहकर्मी वौपारियां अर समाज सारू जुटावण नै अभिप्रेरित कर्‌या। इणी वजै सूं वौपारिक घराणां नै आपरै समाज रै लोगां रौ चाईजतौ सैयोग अर सम्मान मिल्यौ।

पण इण अबखाई रौ दूजी सबळी पक्ष है के अेक कानी प्रकृति जठै कठोर अर क्रूर होवै, उठै रौ मानखौ बलिष्ठ, हिम्मतवर, गाढवाळौ अर कष्ट सहिष्णु होवै। उणमें उदात्त मानवीय गुण पुष्कळ रूप सूं मिळै। दूजी कानी जठै प्रकृति मेहरबान अर कृपाळू होवै, उठै रौ मानखौ आळसी, डरपोक अर कमजोर होवै। उणमें मानवीय गुणां री कमी निगै आवै।

औ ई कारण है के इण धरती में जायौ-जलम्यौ मिनख दुनिया रै कोई खुणै में गयौ, छानौ कोनी रह्यौ। आपरी मैणत, हिम्मत अर बहादुरी रै पाण वौ सदीव हरावळ में चालतौ निगै आयौ। उदाहरण सरूप राजस्थान रै शेखावाटी इलाकै नै लेवां। औ छेत्र मरुस्थळी अर अनुपजाऊ है, पण अठै जीवट री खेती पाकै। अठै का तौ माथौ कटाय'र मायड़भोम री रक्षा करणिया वीर जनमै अर का विणज-वौपार में नांव उजागर करणिया लिछमी रा लाडेसर। इण धोरा धरती में जनम्योड़ा राजपूतां जुद्ध भोम में जूंझ'र आपरौ जौहर बतायौ तौ अठै रा वौपारियां आपरै बुद्धिबळ सूं देश री अलंघां पार मंडिया में पूग'र आपरी धाक जमाई। औ कुदरत रौ नेम है के जिण धरती में कीं नीं मिळै, उठै रौ मानखौ सै कीं लेवण री हिम्मत राखै। अभावां री उपलब्धि सूं अर विफळता रौ सफळता सूं वौ ई नातौ है जिकौ आवश्यकता रौ आविष्कार सूं है। इजरायल री मरुभोम रा यहूदी पूरै यूरोप अर अमेरिका माथै छायग्या तौ राजस्थान री मरुभोम रा वौपारी देश रै खुणै-खुणै अर आखी दुनिया में पूगग्या।

सैकड़ूं बरस पैला रौ प्रवास

आज देश रै मोटौ मोटै उद्योगपतियां में आधै सूं बेसी प्रवासी राजस्थानी है। मुल्क रै आधै सूं बेसी आर्थिक साधनां माथै वां रौ कब्जौ है। आपां सगळां रै वास्तै आ बात घणै गरब अर गुमेज री है। पण इण स्थिति में पूगण वास्तै कितरी पीढियां री हिम्मत, मैणत अर लगन काम आई, वा अेक विचारणजोग बात है। आज देश में जिकौ नांवचीन उद्योगपति निजर आवै, वांरा दादा-पड़दादा किण हालत में धोरा धरती सूं बारै निकळ्या होसी अर किण विकट परिस्थितियां में रैय'र वां विणज-वौपार करियौ होसी, उणरी कल्पना ई आज नीं की जाय सकै।

आज सूं दो-तीन सौ बरसां पैली नीं तौ आपणै अठै रेलगाडियां ही अर नीं मोटरां। हवाई जहाज इत्याद री तौ कल्पना करणी ई बेकार ही। उण

हालात में ई राजस्थान रा वौपारी बंगाल सूं लगायनै आसाम रै अबखै भाखरां तांई पूगग्या अर अठीनै अहमदाबाद-बंबई सूं लगायनै धुर दक्खिण तांई फैलग्या। कोई गांवड़ौ के कस्बौ इसौ नीं जठै नेनौ-मोटौ राजस्थानी वौपारी नीं लाधै।

जात्रा उण वखत ऊंटां-घोड़ां माथै होवती या पैदल। रेलवे टेसण पकड़ण सारू केई दिनां तांई ऊंटां माथै बैठ'र जात्रा करणी पड़ती। स्व. सेठ जी.डी. बिड़ला रा दादौसा शिवनारायणजी २३ बरस री उमर में जद पैलड़ी वळा बंबई गया तौ पिलाणी सूं ठेट खंडवा तांई ऊंटां माथै गया हा। खंडवै पूगतां वांनै पूरा बीस दिन लाग्या। उण जमानै में रेलवे लाईन खंडवा सूं बंबई तांई बण्योड़ी ही। मारग में चार धाड़वियां रौ अणूंतौ डर रैवतौ इण वास्तै लोग गन्तव्य पूग'र तीन-तीन, च्यार-च्यार बरसां री लांबी मुसाफरी करनै पाछा घरां आवता। टाबर-छोरुवां नै सागै लिजावण रौ सवाल ई नीं हौ। इण कारण कुटुंब-परिवार राजस्थान रै गांवां में रैवतौ अर खुद काळा कोसां दूर असैंधी धरती अर अणजाण बस्ती में दिन काटता। उण जमानै में डाक-टपाळ री ई कोई ढंगसर व्यवस्था नीं ही।

इण भांत अलेखूं अबखाइयां ही, जिण रौ हिम्मत सूं मुकाबलौ करनै राजस्थानी वौपारी समाज आगै बधियौ।

प्रवासी राजस्थानी जिण भांत आगै बधियौ इणरौ मूळ कारण इणरौ गुणवान अर चरित्रवान हुवणौ हौ। वौ जठै कठै ई गयौ, उठै रौ ई बणग्यौ अर उण प्रदेश री तरक्की में दिलोजान सूं सहयोग दियौ। वौ कठैई लोगां री आंख में घाल्यौ ई नीं खटक्यौ। आपरै उत्तम चारित्रिक गुणां रै कारण उणै सगळौ ठौड आपरौ सिक्कौ जमाय दियौ। आसाम-बंगाल में तौ उण जुग में 'मारवाड़ी बाबू' देवता रै उनमान पूजीजग्यौ। उठै री प्रजा रौ उण माथै अणूंतौ विसवास हौ। कोर्ट-कचैड़ियां में उणरी साक्षी प्रामाणिक मानीजती अर खाली जबान माथै लाखां रौ विणज-वौपार चालतौ। आसाम में तौ आ हालत ही के उठै रा लोग उत्तराखंड री तीरथ जात्रा माथै जावता तद घर रा बूढा-ठाडा माईतां अर टाबरां नै मारवाड़ियां रै घरां में सूंपनै जावता। वांनै भरोसौ हौ के इण घरां में वांरी पूरी देखभाळ होसी अर वां नै कोई तकलीफ नीं पड़सी।

बिणज-वौपार रै मामलै में राजस्थानी कद सूं बारै जावणा सरू हुया, इण बाबत विचार करां तौ

राजस्थानी उद्यमियां व्यावहारिक प्रशिक्षण माथै बेसी बळ दियौ। जित्ता राजस्थानी सफळ उद्यमी हुया है, उणां रै कनै प्रबंध री कोई उपाधि नीं ही, पण व्यवसाय रौ गैरौ अनुभव हौ। आं लोगां में सरू सूं ई आ परंपरा रैयी के टाबरां नै सै सूं पैला गणित, बहीखाता, भाव-तोल अर पत्र-वैवार री शिक्षा दिरीजती। इण तरै उणां रा टाबर गणित वगैरा में पारंगत हुय जावता। पछै बुजुरग उद्यमी उणां नै वौपारिक सूत्रां री मौखिक सीख देवता। अेक बात माथै खास जोर दिरीजतौ के बिकवाळ री इच्छा सूं माल खरीदणौ चाइजै अर खरीदार री गरज सूं माल बेचणौ चाइजै। इण वौपारिक जाणकारी रौ इज परिणाम हौ के राजस्थानी वौपारी घणा पढ्या-लिख्या नीं हुवता थकां ई वौपार में प्रवीण बणग्या।

जाण पड़ै के आ परंपरा खासी जूनी है। सूखै प्रदेश में कमाई रा साधन नीं होवण सूं हिम्मतवर राजस्थानी घणै पुराणै जमानै सूं दूजै प्रांतां में आवता-जावता रह्या। इतिहास में इणरा दाखता ठेट मुगलकाल सूं मिलै। अठारवीं सदी में जगत सेठ (मारवाड़ी ओसवाल) रौ परिवार बंगाल रै नवाबां अर नाजिमां रौ बैंकर हौ। औ घराणौ इतरौ प्रभावशाली हौ के इणरै इसारै माथै मुगल सम्राट गादी माथै बैठता अर उतरता जगतसेठ री ओटम सूं। मारवाड़ रा दूजा निरा ई जैन परिवार बंगाल पूगा अर नवाबां री राजधानियां अर आजमगंज, जियागंज इत्याद बस्तियां में बसग्या। आज ई वै परिवार मारवाड़ी समाज में प्रमुख गिणीजै। उणां उठै मोटी-मोटी जागीरां खरीदली अर नवाबां रा बैंकर बण्या रह्या। प्रमुख इतिहासकार कर्नल टाड १८३२ में लिख्यौ है— ''भारत में दस में सूं नव बैंकर अर वौपारी मारवाड़ रा वासी है अर घणकरा जैन है।''

राजस्थानियां रौ घणौ प्रवसन अंगरेजां रै जमानै में हुयौ। १८५७ रा गदर रै बाद देस में रेल

लाईणां रौ जाल-सो बिछग्यौ। इणसूं देश रा प्रमुख नगर रेलमारग सूं जुड़ग्या अर आवागमन सोरौ होयग्यौ। इण कारण राजस्थान सूं बारै जावण री प्रक्रिया में १८६० सूं लगायनै १९०० तांई खासी तेजी आई। गांवां सूं लोगां रा टोळा रा टोळा कमाई वास्तै बारै जावण लाग्या। औ काम दूजै री मदद सूं बेसी हुयौ। अै गांव, अेक जात क अेक इलाकै रा लोग बारै जायनै कठैई चाल पड़ग्या तौ उण लारला सैकड़ूं जणा नै खांच लिया।

वौपार रै छेत्र में

उण जमानै में बंबई अर कळकत्तौ मोटा बंदरगाह होवण सूं वौपार रा प्रमुख ठिकाणा गिणीजता। इण कारण राजस्थानी प्रवासियां रौ प्रवसन इण दोनूं नगरां कानी बेसी हुयौ। बीकानेर अर शेखावाटी रा घणकरा लोग आसाम-बंगाल कानी तौ मारवाड़-मेवाड़ रा लोग महाराष्ट्र अर मध्य भारत अर दक्खिण कानी। महाराष्ट्र अर मध्य प्रदेश में राजस्थानी पैली मराठां रा बैंकर अर वांरी फौजां में ठेकेदार बण्या अर इणरै पछै वौपार रै छेत्र में आया। मराठां सूं राजस्थानी वौपारियां रौ संपर्क वारै राजस्थान आक्रमण री वखत हुयौ होसी। महाराष्ट्र में राजस्थानियां नै गुजराती वौपारियां सूं मुकाबलौ करणौ पड़्यौ। प्रामाणिक इतिहास सूं जाणकारी मिळै के मध्य भारत में मारवाड़ी फर्मां १७८० रै पैली ई थापित होयगी ही। अेक अंगरेज .जॉन मैलकॉम १८२९ में लिखै— ''मध्य भारत रा सगळा साहूकार अर सराफ घणकरा बाणिया है, जिकौ का तौ गुजराती है अर का मारवाड़ी।''

माळवै में अमल (अफीम) री खेती परंपरा सूं होवती आई। बंगाल रै किसान पांत अठा रै किसान नै इण खेती में तिगुणौ नफौ हौ। बंगाल में इण खेती माथै सरकारी नियंत्रण हौ, जिणसूं अठै माळवा में आ खेती घणी फूली-फळी। १९वीं सदी में अमल रौ वौपार करण सारू राजस्थान सूं हजारूं वौपारी माळवै पूगग्या। अै लोग किसानां नै खेती सारू करजौ देवता अर अमल रौ वौपार ई करता। होळै-होळै अमल रै वौपार रौ विस्तार गंगा री घाटी अर बंगाल-बिहार तांई होयग्यौ। इण रौ निर्यात होवण लाग्यौ। इण छेत्र में घणकरी मारवाड़ी फर्मां इज काम करती। १९वीं सदी रै चौथै दशक में फरूखाबाद अर मिरजापुर री अेक सुप्रसिद्ध फर्म सेवाराम रामरिखदास रै बही-खाता सूं ठा पड़ै क वा अमल रौ ई धंधौ करती।

उत्तरी भारत में खुरजा, हापुड़, हाथरस,

फिरोजाबाद अर मिरजापुर इत्याद नगर जिकौ अनाज री प्रमुख मंडियां ही, १९वीं सदी तांई सगळी राजस्थानियां रै कब्जै में आयगी ही। सरुपांत में अठै वां नै पंजाबी खत्रियां सूं करडौ मुकाबलौ करणौ पड़ियौ, पण सेवट सिक्कौ इणां रौ जम्यौ।

इण सगळी सफळता रै लारै राजस्थानी वौपारियां री मैणत हिम्मत अर धंधै रै प्रति लगन काम करै ही। राजस्थानी में अेक कहावत मशहूर है के— 'इंसान सौ कोस जावै तौ ई उणनै आपरै घर रौ खुणौ दीसै।' बंबई अर कलकत्तै जिसी महानगरियां में जाय ई अै लोग मरुस्थळ रै काळै कैरां अर सूखै खेजड़ां नै भूल्या कोनी। बंबई री चौपाटी अर कलकत्तै री चौरंगी माथै घूमतां थकां ई आपरी धोरा-धरती याद रह्यी। इण वास्तै कमाई रै सागै मितव्यतता बरत'र इण लोगां 'कूकौ खायनै कण रौ संचय कियौ।' राजस्थान चरित्र रौ औ सै सूं मोटौ गुण है, जिणरै कारण समाज कमाई करनै कीं पईसा बचाय सक्यौ।

बीसवीं सदी री सरुआत में राजस्थान सूं प्रवास रौ सिलसिलौ कितरौ तेज रह्यौ, इणरी जाणकारी जणगणना रा आंकड़ा सूं मिळै। १९०१ री जनगणना मुजब उण वखत बंबई नगर री कुल जनसंख्या दस लाख ही, जिणमें अेक लाख पचास हजार वौपारी हा। वौपारियां में १३ हजार प्रवासी राजस्थानी हा जिका खासकर क्राफेड मार्केट, भूलेश्वर छेत्र अर कालबादेवी रोड माथै बसियोड़ा हा। इण १३ हजार में सूं २ हजार उदयपुर रा, १ हजार बीकानेर रा, ७ हजार पांच सौ जोधपुर रा अर १ सौ जैपुर रियासत रा हा। इण आंकड़ां सूं इण बात री ई जाण पड़ै के उण बगत बंबई पूगणिया प्रवासी किण-किण धंधा में लाग्या।

इणी'ज भांत सरूपांत री जाणकारी मुजब कलकत्तै में १८१३ में राजस्थानी प्रवासियां री कुल संख्या फगत ८० ही, जिकी बीस बरसां पछै ६०० हुई। १८९१ अर १९११ रै बिचाळै आ संख्या बधती-बधती २५ हजार तांई पूगगी। इण तरै आ बात सिद्ध होवै के ज्यूं-ज्यूं वखत बदळतौ गयौ अर आवण-जावण रा साधन सुधरता गया, राजस्थान सूं वत्तै सूं वत्ता प्रवासी दूजै प्रांतां में जावता रह्या।

धंधैवाड़ी रै हिसाब सूं इण सगळां सरुपांत में आपरी हैसियत मुजब नेनी- मोटी दुकानदारियां अर ब्याज माथै रकम देवण रौ काम सरू कर्यौ। इणरै पछै दलाली अर आढत रौ धंधौ पकड़ियौ।

होळै-होळै भागीदारी सूं मोटा धंधा में हाथ घाल्यौ अर सेवट उद्योग रै छेत्र में पूंजी लगायनै उद्योगपति बणग्या। पण इण प्रक्रिया सूं गुजरता वां नै जिकौ अनुभव हुयौ, अर बीच में आयोड़ी अबखाइयां रौ जिण भांत उणां मुकाबलौ करियौ उणरी चरचा विस्तार सूं होवणी जरूरी है।

वौपार सूं उद्योग रै छेत्र में

पैलै विश्व जुद्ध तांई राजस्थानी प्रवासी उद्योग रै छेत्र में हरावळ में नीं हा। केई फर्मां आयात-निर्यात में आपरा पग आछी तरियां जमा लिया हा। पण उद्योग रै छेत्र में राजस्थानियां रौ प्रवेस जुद्ध री वखत अर बाद में ई हुयौ। १९०६ में कलकत्तै बंदरगाह सूं जितरौ सूती कपड़ौ आयात होवतौ, उण में भारतीय वौपारियां रौ हिस्सौ फगत दस प्रतिशत हौ। पण १९२८ तांई औ हिस्सौ पचास प्रतिशत रै लगैटगै पूगग्यौ। १९१७ में बिड़ला बंधुवां सै सूं पैली पटसन रै निर्यात वास्तै लंदन में आपरौ ऑफिस खोल्यौ। इण पछै केई राजस्थानी पटसन उद्योग रै छेत्र में आया अर सफळ हुया।

औद्योगिक जगत मांय राजस्थानियां जिकी सफळता हासल करी, उणां रौ घणकरौ जस उणां रै पैतृक गुणां अर आरथिक कारणां नै जावै। यूं तौ संयुक्त परिवार प्रणाली औद्योगिक विकास रै मारग मांय अड़चनां पैदा करै, पण राजस्थानियां नै वौपार में नीं सिरफ स्हारौ दियौ, बल्कै उणसूं उणां नै आपरी पूंजी रै विस्तार में ई मदद मिली। दरअसल संयुक्त परिवार प्रणाली सूं वौपार सारू जिण सहायक लोगां री जरूरत पड़ती, उणां नै वै आपरै परिवार मांय ई मिल जावता। इणरै अलावा इणसूं उणां नै जरूरी पूंजी निवेश अर पारिवारिक वौपार विस्तार में मदद मिलती। साथै ई घर-परिवार री चिंता सूं ई मुगत रैवता। पैतृक गुणां रै कारण इज उणां री व्यवसाय माथै पकड़ मजबूत हुयी अर प्रगति रौ मारग प्रशस्त हुयौ।

केई राजस्थानी फर्मां जावा सूं खांड अर जापान सूं सीमेंट रै आयात रौ काम करण लागी अर विदेशी फर्मां नै मात देयदी।

पैलै विश्वजुद्ध री वखत सरकारी सहायता रै कारण भारत रै औद्योगिकरण नै टेकौ मिळ्यौ। पूरबी भारत में पैलड़ीवार इसै उद्योगां री थरपणा हुयी, जिणां रा मालिक भारतीय अर खासकर प्रवासी राजस्थानी हा। औद्योगिकरण रौ औ विस्तार कोई संजोग मात्र नीं हौ। इणरौ प्रमुख कारण जापानी कपड़ै रै आयात सागै पटसन अर सूत री दिनौदिन बधती मांग ही। इणसूं राजस्थानी फर्मां नै आछौ चांस मिळ्यौ अर वां री स्थिति मजबूत होयगी। इण फर्मां में केशोराय पोद्दार अर बिड़ला री फर्मां प्रमुख ही। १९११ में जापानी कपड़ै रौ भारत में आयात करण वाळी पैली फर्म बिड़ला री ई ही।

यूं सरूपांत में बंबई में कपड़ा मिलां री थरपणा गुजरातियां अर पारसियां रै हाथ सूं हुई। पारसियां में टाटा परिवार भारत में बिजळी, इस्पात अर वनस्पति उद्योगां री सरूआत करी। पण इणसूं ई पैली अेक प्रमुख राजस्थानी प्रवासी राजा गोविंदलाल पित्ती १८७० में दो कपड़ै री मिलां खरीद ली ही। दूजा राजस्थानी कपड़ा उद्योग में १९३०-३१ रै बीच में आया। बंबई में करीम भाई पेटिट री केई मिलां जद फैल होयगी तौ घणकरी राजस्थानी प्रवासियां खरीदली। इणरै अलावा कलकत्तै री केई कपड़ा मिलां ई राजस्थानियां रै हाथां आयगी। बीसवीं सदी रै चौथै दशक तांई देश में कपड़ै री प्रमुख मिलां में सूं तीस प्रवासी राजस्थानियां रै कब्जै ही।

देस में टाटा रै बाद बिड़लाज सै सूं मोटा उद्योगपति गिणीजता। इणां आपरी पैलड़ी जूट मिल १९१९ में कलकत्तै में खोली ही। इणी'ज बरस इंदौर रै प्रमुख बैंकर सर सरूपचंद हुकमचंद ई कलकत्तै रै कनै अेक मोटी पटसन मिल सरू करी ही। इणी'ज भांत फर्म सूरजमल नागरमल रै संस्थापक सूरजमल जालान १९२७-२८ में अर अफीम रै प्रमुख सटोरियै हरिदत्त चामड़ियै री फर्म ई पटसन मिलां री सरुआत करी।

कलकत्तै में यहूदी अर अमेरिकन उद्योगपतियां रौ मुकाबलौ करण वाळा राजस्थानी प्रवासी ई हा। इण लोगां जिकी पटसन मिलां सरू करी, वै देश री प्रमुख पटसन मिलां ही। बिड़ला बंधुवां दिल्ली में १९२० में अेक कपड़ै री मिल थापित करी अर १९२२ में इंदौर में भंडारी बंधुवां ई अेक कपड़ा मिल सरू करी। इणी'ज भांत पूरै

मध्य भारत में केई ठौड़ राजस्थानियां री कपड़ा मिलां काम करै ही। वस्त्र उद्योग रै अलावा केई प्रवासी बंधुवां कोयलै अर चाय बागान रै छेत्र में ई प्रवेस कियौ अर १९२० रै बाद केई कोयला खानां अर चाय बागान खरीद लिया।

दूजै उद्योगां रै ज्यूं खंडसारी उद्योग कानी राजस्थानियां रौ ध्यान १९३२ में गयौ। इण वखत तांई सरकारी नीति रै कारण केई चीणी मिलां री थरपणा होयगी ही। १९३२ में बिड़ला बंधुवां तीन अर डालमिया कंपनी अेक चीणी मिल सरू करी। सेक्सरिया बंधु बंबई रै कपड़ा उद्योग में आगीवाण हा, उणां अर खेतानां ई केई चीणी मिलां सरु करी। रामकृष्ण डालमिया सिमेंट उद्योग में प्रमुख बणग्या अर इणीज भांत केई राजस्थानियां उद्योग रै न्यारा-न्यारा छेत्र में आय'र सफळता पाई।

आ सरुपांत री स्थिति है जद प्रवासी राजस्थानियां उद्योग रै छेत्र में आपरा पग रोप्या ई हा। उणरै पछै तौ उणां इण छेत्र में कितरी तरक्की करी, वा कोई सूं छानी कोनी। खासकर आजादी मिल्यां पछै राजस्थानियां उद्योग रै छेत्र में जिकौ काम करियौ, वौ घणौ सरावणजोग है। कोई पण कौम री कीमत उणरै कामां सूं ई होवै। जिकौ जैविक गुण राजस्थानी प्रवासियां रै खून में है, वौ इण धरती री कीरत नै उजागर करै।०

नैनी-मोटी दुकानदारी सूं बडै-बडै औद्योगिक प्रतिष्ठानां तांई पूगण री इण जात्रा में मैणत, हिम्मत, लगन अर सूझ-बूझ री जरूरत होवणी तौ पैली बात ही, इणरै अलावा प्रवासी समाज बारै जाय'र जिण ढंग सूं हिळमिळ नै रह्यौ, अेक दूजै री मदद करी अर संगठित रूप सूं आगै बढ्यौ, वा घणी सरावणजोग बात है। अेक-दो प्रामाणिक उदाहरणां सूं इण बात री पुष्टि होय जासी।

सेठ नाथूराम सराफ मंडावा (शेखावाटी) रा वासी हा, जिणां सरूपांत में कलकत्तै आय'र मुनीम रै रूप में काम करियौ। धीरै-धीरै आपरौ खुद रौ नेनौ-मोटौ धंधौ सरु करियौ, जिणमें वां नै आछी सफळता मिळी अर वै लूंठा पूंजीपति बणग्या। वारै बारै में अेक जाणकार लिख्यौ है—

''सेठ नाथूराम रै मन में आपरी बिरादरी रै प्रति घणी सहानुभूति ही। उणां प्रवासी राजस्थानियां वास्तै चित्तपुर रोड रै नाकै माथै अेक वासौ (लॉजिंग-बोर्डिंग) खोल राख्यौ हौ, जठै वै आराम सूं रैय सकै हा। उणां आपरै गांव मंडावा अर शेखावाटी छेत्र सूं केई रिस्तेदारां अर ओळखीता नै कलकत्तै बुलाया अर वांरी हर तरै सूं

देश भर मांय राजस्थानी व्यवसायियां री साख है अर अमूमन औ कैयौ जावै के सिद्धांतां रा धणी मारवाड़ी वौपारी आपरै उसूलां रा पक्का हुवै। दरअसल मारवाड़ी व्यवसायी वौपार-व्यवसाय में नैतिक मूल्यां रौ ध्यान राखता आया है। रिणां रै भुगतान रै संबंध में वै ईमानदारी बरतता आया है। बुजुरगां री मान्यता है के— 'बाणिया कौ हर समै ध्यान रवै मान कौ, मान ही जातौ रवै तौ धन रयौ किण काम कौ!' राजस्थानियां री हमेस आ कोसिस रैवै के व्यवसाय में ईमानदारी अर सच्चाई हुवै। देस मांय इण तरै री स्वैच्छिक व्यवस्था करण वाळी आ पैलपरथम व्यावसायिक जाति रैयी। इण व्यवस्था बाबत मैक्स वेबर कैयौ के— ''मारवाड़ी जैनी लेन-देन में भरोसै अर सच्चाई रै कारण आपरी ईमानदारी वास्तै चावा है!''

मदद करनै पगां माथै करिया। कलकत्तै री सूतापट्टी छेत्र में आज ई मंडावा री मोकळी दुकानां है, जिणरौ अेक मात्र कारण सेठ नाथूराम है।''

इणी'ज भांत सेठ सूरजमल झुणझुणवाळा ई कलकत्तै में आपरी तरफ सूं अेक वासौ खोल राख्यौ हौ, जठै प्रवासी राजस्थानी मुफत में जीम सकै हा। सेठ सूरजमल खुद आपरै सुसरै प्रेमसुखदास कायां री मदद सूं कलकत्तै आय'र बिणज वौपार सरू करियौ हौ। प्रेमसुखदास ई १९वीं सदी रै चौथै दशक में रामगढ रै जुगलकिशोर रुइया री मदद सूं कलकत्तै आया हा। इण भांत तुळसी सेती हरड़मत मिळ्या अर हड़मत सेती राम। राजस्थानवासियां में अेक दूजै री मदद करनै उणनै आगै बढावण रौ अर हिळमिळ नै संगठित रूप सूं जिकौ नामी गुण है, इणसूं अै लिछमी रा लाडेसर बिना कोई भेदभाव रै अेक दूजै री मदद सूं बिणज-वौपार में आगै बढता गया। सो बिणज-वौपार रै विकास में इणां री जातीय भावना ई मैतवपूरण भूमिका निभाई।

समाजसेवा, धरम अर राजनीति रै छेत्र में

राजस्थानवासियां रै चरित्र में अेक गुण औरूं उल्लेखजोग है के वै कमावणौ जाणै तौ उणनै पाछौ खरच करणौ ई जाणै। आज राजस्थानियां रा सैकड़ूं कांई हजारूं चेरिटेबल ट्रस्ट बण्योड़ा है जिका मानव कल्याण खातर खुलै हाथ सूं खरच करै। राजस्थानवासियां री निवेश करियोड़ी मूंघी कमाई रै पाण आज देश में इसी मोकळी संस्थावां है जिकी शिक्षा, चिकित्सा अर समाजसेवा रै छेत्र में काम करै अर हर बरस करोड़ां रुपिया खरच करै। 'मारवाड़ी रिलीफ सोसायटी' जिसी अेकली संस्था रौ सालीणौ बजट लाखां रुपियां रौ हौ। पूरै देश में मिंदरां, तीरथां, धरमसाळावां अर पुन्न खातै जितरौ पईसौ आं लिछमी रा लाडेसर राजस्थानियां समाज रौ लाग्योड़ौ है, उतरौ किणी रौ ई कोनी। राजस्थानी परिवारां रा बणायोड़ा मिंदर तौ कला-कौशल अर स्थापत्य री निजर सूं संसार री अमोलक चीजां है, जिकी देखियां ई बण आवै। इणी'ज भांत विद्यालय, अस्पताल अर दूजी मानवोपयोगी संस्थावां रौ तौ छेह ई कोनी जिकी आं लाडेसरां री मदद सूं चालै।

सही बात आ के समाजसेवा रै छेत्र में राजस्थानवासियां रौ कोई मुकाबलौ ई नीं। बिड़ला, बांगड़, बजाज, साहू जैन, सिंघानिया, रुईया, मोदी, पोद्दार, हिम्मतसिंहका, मालपाणी, डालमिया, राजगढिया, नवलगढिया, केडिया, टाटिया इत्याद अणगिणत इसा परिवार है ज्यां रौ इण छेत्र में गजब रौ योगदान है अर तारीफ री बात आ के वौ निरंतर बधतौ जाय रह्यौ है।

इटली रै रणखेत थरमोपोली रा राजस्थान सूं तुलना करतां अेक कवि साव साची कह्यी के इटली में तौ फगत अेक थरमोपोली है अर राजस्थान री पावन धरा माथै तौ ठौड़-ठौड़ थरमोपोलियां बिखरी पड़ी है। अठै हर गांव-गळी घमसाण हुया। जुग-जुग में आगीवाण हुया। इणी'ज भांत अठै गांव-गांव अर घर-घर में भामाशाह रा वंशज भर्‌या पड़्या है जिकौ अवसर आयां आपरै जीवण भर री मैणत री कमाई आछै काम सारू निछरावळ करतां अंगां ई जेज नीं लगावै।

समाजसेवा अर धरम रा छेत्र रै ज्यूं राजनीति रा छेत्र में ई राजस्थानी लाडेसरां रौ योगदान कम कोनी रह्यौ। इणी'ज लेख सागै बॉक्स मैटर में दियोड़ै फगत अेक बंगाल रै उदाहरणां सूं इण बात री पुष्टि भली भांत होय जावै। भारतीय राष्ट्रीय

कांग्रेस नै आर्थिक मदद देयनै पगां करण रौ प्रमुख श्रेय प्रवासी राजस्थानियां नै ई है। सेठ जमनालाल बजाज, घनश्यामदास बिड़ला अर प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका जिसा नरपुंगव तौ कांग्रेस रा प्रमुख थंभ रह्या। इणां रै पाण ई महात्मा गांधी राष्ट्रव्यापी आंदोलन नै गतिशील कर पाया। कांग्रेस रा सगळा प्रमुख फैसला राजस्थानियां री इमारतां हेठळ ई हुया अर गांधीजी तौ शरीर ई उठै ई छोड्यौ।

राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय रूप सूं भाग लेवण वाळै राजस्थानी लाडेसरां री सूची घणी लांबी है। सगळां रा नांव गिणावणा तौ इण आलेख में संभव कोनी, छतांपण कीं प्रमुख नाव इण भांत है—

सरबश्री जुगलकिशोर बिड़ला, कमलापत सिंघानिया जमनालाल बजाज, घनश्यामदास बिड़ला, श्रीकृष्णदास जाजू, डॉ. राममनोहर लोहिया, प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका, लाला श्यामलाल, श्रीमती चंद्रबाई, शिवदास डागा, जमनालाल चौपड़ा, सुगनचंद लुणावत, शुकदेव अग्रवाळ, बैजनाथ केडिया, हनुमानप्रसाद पोद्दार, पूनमचंद रांका, चांपादेवी भारूका, महादेवी केजड़ीवाळ, मगनलाल बागड़ी, गोविंददास मालपाणी, ब्रजलाल बियाणी, सीताराम सेकसरिया, साहू शांतिप्रसाद, आनंदीलाल पोद्दार, बसंतलाल मुरारका, ईश्वरदास जालान, हीरालाल लोहिया इत्याद।

देश रै आर्थिक अर औद्योगिक विकास में प्रवासी राजस्थानी लाडेसरां रौ योगदान तौ जगजाहिर। राजस्थानी परिवारां देस रै आर्थिक विकास सारू जिकौ काम करियौ उणरौ लेखौ जोखौ होवणौ हाल बाकी है। इण परिवारां आपरै नांव सागै मायड़भोम रा नांव नै ई उजागर कर दियौ। नवलगढ सूं गयोड़ौ 'नवलगढिया' बाज्या तौ राजगढ सूं उठ्योड़ा 'राजगढिया'। लोह रौ वौपार करियौ तौ इसौ डंकौ बजायौ के खुद 'लोहिया' बाजण लागा अर रुई रै धंधै में घुस्या तौ इसी धाक जमाई के खुद ई 'रुइया' बणग्या। कपड़ै रौ धंधौ करनै बजाज पीढियां रै वास्तै 'बजाज' बणग्या तौ रंग रौ धंधौ करनै सदा सर्वदा खातर 'रंगवाळा' होयग्या।

कला-कौशल अर स्थापत्य रै छेत्र में

राजस्थान कला कौशल रौ भंडार गिणीजै। अठै री विविध कलावां संसार रै खूणै-खूणै में चावी। इण कारण दुनिया रा हर खूणै सूं हर वर्ग रा यात्री अठै री कलावां नै देखण सारू आवै। निरत,

संगीत अर वास्तुकला सूं लगायनै स्थापत्य कला तांई रै हर छेत्र में राजस्थान रौ कोई जोड़ कोनी। इणरी आपरी ओळखाण अर मठोठ न्यारी।

खासकर अठै री स्थापत्य कला तौ सगळै संसार में चावी-ठावी। आ परंपरा घणी लूंठी अर सरावणजोग। राजस्थान रा लिछमीपतियां आपरा अखूट खजाना इण कला रै नांव माथै निछरावळ कर नांख्या।

देलवाड़ै री परंपरा में भारत रै खूणै-खूणै में राजस्थानवासियां मिंदरां रौ निरंतर निरमाण करायौ। आज देश में ठौड़-ठौड़ बिड़ला, बांगड़, सोमानी, सिंघानिया अर दूजा केई धर्म प्रेमी लाडेसरां रा बणायोड़ा आं मिंदरां री अेक लूंठी शृंखला है। अै अेक सूं अेक भव्य मिंदर है जिणां में सूं घणकरा वैष्णव अर कीं जैन मिंदर है। जैन मिंदरां में ई घणकरौ पइसौ राजस्थानी लाडेसरां लगायौ है। आजादी पछै रा दशकां में बणियोड़ा मिंदरां में कानपुर में सिंघानिया परिवार रौ बणायोड़ौ राधाकृष्ण मिंदर तौ स्थापत्य कला रौ अेक बेजोड़ नमूनौ है।

राजस्थान कला रै छेत्र में सदीव हरावळ में रह्यौ। इणरौ मोटौ कारण औ के अठै मैणत सूं कमायोड़ी लिछमी कला रै वास्तै खुलै हाथां खरच होवती रह्यी अर इण भांत कला-कौशल अर स्थापत्य रै छेत्र में राजस्थानी लाडेसरां रौ लूंठौ योगदान रह्यौ।

आज च्यारूंमेर लोगां रै मनां मांय औ सवाल उठै के अैड़ा कुण-सा गुण है, जिणां री वजै सूं मारवाड़ी घराणा वौपार अर उद्योग मांय आगीवाण बण्या अर वै देस-दुनिया रै खूणै-खूणै पूग'र सफळतावां हासल करी अर जस कमायौ? तौ सार रूप में औ कैयौ जाय सकै के राजस्थान रा लिछमी-पुत्र आदरसां रौ अनुकरण करै जिणां में सामाजिक संगठन, जातीय भावना, संयुक्त परिवार प्रणाली, धारमिक भावना, लोक-कल्याण, व्यावहारिक प्रशिक्षण, मितव्ययता, वौपारिक प्रतिभा, व्यावसायिक नैतिकता, विकास भावना, हुंडी, बीमौ, साझेदारी साख, राजनैतिक समरथन, सांस्कृतिक समायोजन इत्याद है। आं सब रै बळ माथै वै आखै देश रा ई नीं विदेशी बजारां मांय खास अर मैतवपूरण स्थान बणाय लियौ है।

औद्योगिक घराणां री नुंवी पीढी अर राजस्थानीपणौ

वखत रौ वायरौ बड़ौ प्रबळ गिणीजै। फेरूं इण वैज्ञानिक जुग में मौजूदा बीस-तीस बरसां में जिण झड़प अर तेजी सागै पूरै मानव समाज में बदळाव आयौ, वौ लारलै सौ पचास बरसां में ई कोनी आयौ। इणरौ असर राजस्थान री नुंवी पीढी माथै ई पड्यौ। इणसूं आज हालत आ बणगी के खासकर औद्योगिक घराणां री नुंवी पीढी में 'राजस्थानीपणौ' कम होवतौ जाय रह्यौ है। घनश्यामदासजी बिड़ला जठा तांई मौजूद हा, वै आपरै संस्थानां में पक्की परख करियां पछै बेसी सूं बेसी राजस्थानियां नै ई राखता अर वां रै सागै बात बतळावण राजस्थानी भाषा में ई करता। इणसूं भावनात्मक संबंध, विसवास, निष्ठा अपणापौ बण्यौ रैवतौ अर राजस्थानियां रै खून में मिळ्योड़ै चारित्रिक गुणां रौ संस्थानां नै लाभ मिळतौ, जिणसूं वै फूलता-फळता। भाषा संस्कृति री वाहक गिणीजै, इण कारण जे नुंवी पीढी आथूणै रंग में रंगीज'र आपरी बुनियाद नै भूलगी तौ वा घाटै में रहसी। आ बात सही के नुंवौ सै कीं खराब कोनी अर पुराणौ सै कीं आछौ कोनी। पण विवेक सूं विचार करां तौ नुंवै री चमक-दमक में पुराणी आछी बातां नै भूलण रौ खतरौ बेसी है। क्यूंकै नुंवी पीढी नै आ बात गांठ बांधणी पड़सी के जे वांरौ 'राजस्थानीपणौ' खतम होयग्यौ तौ सै कीं खतम हुय जासी। लिछमी रा लाडेसर इण समाज कनै खुद री जड़ां हरावळ में रैवणी जरूरी है।

देश री मौजूदा राजनैतिक अर सामाजिक परिस्थितियां नै देखतां सगळै प्रवासी राजस्थानियां नै संगठित करणौ घणौ जरूरी। आं नै संगठित करियां देस री अखंडता नै बळ मिळसी अर रोजगारपरक चहुंमुखी विकास होसी कारण के राजस्थानी समाज मूळ रूप सूं पक्कौ राष्ट्रवादी, शांतिप्रिय अर कठोर परिश्रमी है।

जी-८, मुल्तान कुंज, भगत री कोठी अेक्सटेंशन
जोधपुर-३४२००५

स्वतंत्रता आंदोलन नै मारवाड़ी लाडेसरां रौ योगदान

— डॉ. गिरिजाशंकर शर्मा

भारतीय स्वाधीनता आंदोलन रै इतिहास री जांच-पड़ताळ करां तौ आ बात उजागर होवै के भारत नै स्वतंत्र करावण में तौ संपूर्ण भारतीय समाज रौ योगदान रह्यौ है, पण राजस्थान रौ वौपारी वर्ग जिकौ पूरै देश में 'मारवाड़ी समाज' रै नांव सूं ओळखीजै, उणरौ स्वाधीनता संग्राम में कितरौ जबरदस्त योगदान रह्यौ, औ फगत अेकलै बंगाल रै उदाहरण सूं ई स्पष्ट होय जावै। बंगाल-आसाम में उण वखत घणकरौ मारवाड़ी समाज विणज-वौपार में लागियोड़ौ हौ अर वीं रै बाबत आ आम धारणा ही के इण समाज नै आपरै धंधैवाड़ी सूं मतळब है, वौ कोई दूजै पड़पंच में नीं पड़ै। पण मारवाड़ी समाज खतरौ झेलता थकां स्वाधीनता आंदोलन में जिकौ जबरौ योगदान दियौ, वौ शोध सूं ई ठा पड़ै।

बंगाल ठेठ सूं ई स्वाधीनता आंदोलन रौ गढ रह्यौ। लार्ड कर्जन री बंग-भंग घोषणा रै पछै १९०६ में कलकत्तै में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस रौ अधिवेशन हुयौ। इण में पैलड़ीवार स्वराज्य प्राप्ति रै लक्ष्य री घोषणा करीजी। राष्ट्रीय भावना सूं प्रेरित होयनै बंगाल रा निरा ई राजस्थानी प्रवासियां इण सम्मेलन में सदस्य रूप में भाग लियौ, इण अधिवेशन में गरमदळ रा नेतावां जिकौ उग्र विचार पेस किया अर राष्ट्रीय आंदोलन रौ सरूप निर्धारित कियौ, केई राजस्थानी वौपारियां नै वांरा वै विचार समयोचित लागिया। इसै मारवाडियां में श्री प्रभुदयालजी हिम्मतसिंहका, हनुमानप्रसादजी पोद्दार, ज्वालाप्रसादजी कानोड़िया, ओंकारमलजी सराफ, कन्हैयालालजी चितलंगिया इत्याद खास हा।

सन् १९२१ रै अड़ै-गड़ै गांधी युग आवण रै सागै आंदोलन सत्याग्रह अर असहयोग रौ मारग पकड़्यौ। बंगाल में ई असहयोग अर सविनय अवज्ञा आंदोलन जोर पकड़ण लाग्यौ। बंगालियां रै सागै राजस्थानी प्रवासियां खासकर शेखावटी, बीकानेर, जोधपुर अर उदैपुर रियासतां रा लाडेसरां आंदोलनां में दिल खोल'र भाग लियौ। इण काम में उणां भरपूर आर्थिक सहयोग तौ दियौ ई, इणरै अलावा आंदोलनां में सक्रिय रूप सूं भाग लेयनै जेळ यातनावां अर भांत-भांत रा फोड़ा ई भुगतिया।

बंगाल सरकार रै अेक सुरक्षा अधिकारी मि. अे. अेच. गजनवी सन् १९३० में आपरै अेक गोपनीय कागद में भारत रै वायसराय रा प्रतिनधि मि. कनिंघम (शिमला) नै लिखियौ के बंगाल में चालतै गांधी आंदोलन नै मारवाड़ी समाज री मदद बंद होय जावै तौ औ आंदोलन मतै ई खतम होय जावै। मि. गजनवी वायसराय नै दो सूचियां भेजी, जिणमें उण प्रवासियां रा नांव हा जिकौ स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय हा। इण शिकायत माथै केई लोग गिरफ्तार हुया अर वां रा बहीखाता जबत करीजिया। इसै लोगां में शेखावाटी छेत्र रा सेठ श्रीकृष्ण सीताराम, बिहारीलाल गोपीराम, पदमचंद पन्नालाल, रामवल्लभ रामेश्वर, रामकृष्ण शिवचंदराम (बिसाऊ), राधाकृष्ण नेवटिया (नवलगढ), मंगतुराम जैपुरिया, गिरधारीलाल जवाहरमल, वल्लभदास भट्ट, शिवदयाल मदनगोपाल, श्रीनिवास पोद्दार, बालकिशन पोद्दार (रामगढ) अर सेठ गोविंदराम परसराम बजाज इत्याद खास हा।

इणां में सेठ राधाकृष्ण नेवटिया, मंगतुराम जैपुरिया अर गोविंदराम परसराम बजाज माथै तौ क्रांतिकारी आंदोलन सूं संबंधित होवण रौ आरोप हौ अर सेठ श्रीनिवास बालकिसन पोद्दार माथै १९२१ सूं ई स्वाधीनता आंदोलन में

राजस्थानी लाडेसरां रा लूंठा शताब्दी पुरुष हा प्रभुदयालजी हिम्मतसिंहका

श्री प्रभुदयालजी हिम्मतसिंहका राजस्थानी लाडेसरां री जूनी पीढी रा लूंठा प्रतीक रैया। आज सूं लगैटगै अेक सौ अस्सी बरसां पैली आपरा पिताश्री रामरिखदासजी खेतड़ी राज रै सिहाणा गांव सूं रवानै होयनै कमाई खातर भारत रै पूर्वांचल में ठेट संथाल परगनै रै दुमका में पूगिया। अठै ई प्रभुदयालजी रौ 16 अगस्त, 1889 नै जनम हुयौ। आपरी शिक्षा-दीक्षा भागलपुर, पटना अर कलकत्तै में हुई। विद्यार्थी जीवण में ई आप राष्टरीय विचारधारा सूं प्रभावित होयनै स्वाधीनता संग्राम सूं जुड़ग्या। बंगाल ठेट सूं क्रांतिकारियां रौ गढ रह्यौ। प्रभुदयालजी क्रांतिकारियां रै संपर्क में आया अर कलकत्तै रै रोडा कांड में पकड़ीजग्या। इणरै पछै तौ आपरौ जीवण देश अर समाज नै ई समरपित रह्यौ। केई समाजोपयोगी संस्थावां री थरपणा करी अर गांधीजी सूं लगायनै सुभाष बोस अर राममनोहर लोहिया तकात रा आप विसवासपात्र रह्या। सरदार पटेल री तौ आपरै माथै पूरी मेहरबानी रैयी। देश में कठैई पण निष्पक्ष जांच रौ काम पड़तौ, सरदार प्रभुदयालजी नै सूंपता। १९३७ में आप बंगाल विधानसभा रा सदस्य निर्वाचित हुया। सो १९४८ तांई कायम रह्या अर इणरै पछै संविधान सभा रै सदस्य रूप में काम करता रह्या। बरस १९४६ में ब्रिटिश सरकार भारत पाकिस्तान सीमा निर्धारण सारू रेडक्लिप री अध्यक्षता में जिकौ अेक सदस्यीय न्यायाधिकरण बणायौ, उण रै सामी आसाम सरकार कानी सूं हिम्मतसिंहकाजी सोलीसीटर रै रूप में बहस करी। वां री इण बहस रै पाण ई सिलहट रौ हिंदू बाहुल्य इलाकौ आसाम नै दिरीजियौ अर बाकी रौ पाकिस्तान नै। सरदार पटेल रै आदेस सूं बरस १९४९ में शंकरराव देव आयोग री अध्यक्षता में गठित त्रिसदस्यीय आयोग रा अेक सदस्य हिम्मतसिंहका ई हा। इण आयोग नै औ निरणै करणौ हौ के भरतपुर, धौलपुर (तत्कालीन मत्स्य राज्य) छेत्र राजस्थान में मिलावणौ के उत्तर प्रदेस में। आयोग रा तीजा मेंबर श्री आर.के. सिंधवा हा। औ आयोग भरतपुर अर धौलपुर री यात्रावां करी अर हिम्मतसिंहका जी इण आयोग सामी बार-बार वठै रा गांवेड़ी लोगां नै गवाही सारू बुलावता अर वां री सांस्कृतिक अस्मिता, भाषा अर दूजी बातां सूं आयोग रा बाकी सदस्यां नै परिचै करावता। हिम्मतसिंहका जी री अथक कोसिसां रौ ई फळ हौ के आयोग आं छेत्रां नै राजस्थान में मिलावण री सिफारस करी। १९५६ सूं ६२ तांई आप राज्यसभा रा सदस्य रह्या अर इणरै पछै दस बरसां तांई लोकसभा में संथाल परगनै कानी सूं सदस्य रह्या। इण भांत प्रभुदयालजी रौ पूरौ जीवण समाजसेवा अर देस भगती नै समरपित रह्यौ। राजस्थानी जन मानस में अेक विसवास प्रचलित है के पड़पोतै जनमियां मिनख सौनै री निसरणी रौ हकदार बणै। पण प्रभु कृपा सूं आप तौ लड़पोता-पोतियां नै रमायां पछै 102 बरस री उमर पूरी कर'र १९९१ में सरग सिधाया।

आर्थिक मदद देवण रौ अर आपरै घर में उणरौ दफ्तर चलावण रौ आरोप हौ।

दूजोड़ी सूची में जिण राजस्थानी लाडेसरां रा नांव हा, वां नै गिरफ्तार तौ कोनी करिया, पण वां माथै ई औ खुल्लौ आरोप हौ के वै गांधीजी रै आंदोलनां में सक्रिय रूप सूं भाग लेवै। इणमें घनश्यामदास बिड़ला (पिलानी), देवीप्रसाद दुरगाप्रसाद खेतान (रामगढ), सीताराम सेकसरिया (रामगढ), रामकुमार जालान (रामगढ), हनुमान प्रसाद वगड़िया (रामगढ), भागीरथ कानोड़िया (रामगढ), लक्ष्मीनारायण खेमाणी (मंडावा), बैजनाथप्रसाद मोतीलाल देवड़ा (फतेहपुर), राधाकृष्ण चावसरिया (नवलगढ), रामकुमार केजड़ीवाल (चिड़ावा), आनंदीलाल पोद्दार (नवलगढ), दुरगाप्रसाद सावसका (नवलगढ), सागरमल नाथानी (दूधावास, चूरू), मुन्नालाल ममूदी (मंडावा), मगनीराम रामकुमार बांगड़ (डीडवाना), हीरालाल नथमल भंवरलाल रामपुरिया (बीकानेर), भंवरीमल जौहरीमल वैद (चूरू) अर सागरमल वैद (चूरू) इत्याद रा नांव प्रमुख रूप सूं हा।

इणां में सेठ रामचंद्र गुरुप्रताप पोद्दार माथै क्रांतिकारी आंदोलन में भाग लेवण रै सागै सविनय अवज्ञा आंदोलन में खुलमखुल्ला आर्थिक मदद देवण रौ आरोप हौ। सेठ रामकृष्ण डालमिया माथै आंदोलन सारू अेक लाख रुपियां री इमदाद देवण रौ आरोप हौ। दूधावास रा सेठ सागरमल नाथानी माथै तौ केई आरोप हा। आर्थिक मदद अर घर में दफ्तर चलावण रै अलावा उणां माथै औ ई आरोप हौ के वै हड़ताळां रा समर्थक हा अर खुद स्टॉक अेक्सचेंज रा सदस्य होवण रै नातै वै हड़ताल रौ विरोध करणिया अंगरेज वौपारियां नै वांरै सागै वैपार नीं करण री धमकी देवता हा।

अंगरेज सरकार री निजरां में कीं वौपारी खास दोषी अर घणा खतरनाक हा वां री सूची न्यारी बणियोड़ी ही। इण लोगां में सेठ घनश्यामदास बिड़ला, रामकृष्ण डालमिया, मुन्नालाल मसूदी, राधाकृष्ण नेवटिया, मंगतुराम जैपुरिया, श्रीनिवास बालकृष्ण पोद्दार, गोविंदराम परसराम बजाज, देवीप्रसाद दुर्गाप्रसाद खेतान, हनुमानप्रसाद बगड़िया, रामकुमार जालान, भागीरथ कानोड़िया अर बालचंद मोदी इत्याद रा नांव प्रमुख रूप सूं हा। अै सगळा गांधीजी रा खास सहयोगी हा।

राजस्थान रा इण प्रवासी लाडेसरां नै स्वाधीनता आंदोलन सूं विरत करण तांई अंगरेज सरकार घणी कोसिसां करी। इण सारू उणै भांत-भांत रा दंद-फंद करिया।

अंगरेज इण बात नै आछी तरियां जाणै हा के राजस्थान रौ औ वौपारी वर्ग ब्रिटिश भारत में विणज-वौपार करनै धन कमावै हौ, पण वां री वफादारी अंगरेजी सरकार सागै नीं होय'र आपरै मूळ वतन में रियासती रजवाड़ां सागै ही। कारण के वांरी चल-अचल संपत्ति उठै ई सुरक्षित ही। अंगरेजी सरकार इण स्थिति रौ लाभ उठावतां देसी रजवाड़ां नै लिखणौ सरू करियौ के वै इण प्रवासी राजस्थानियां माथै दबाव नांख'र स्वाधीनता आंदोलन सूं विरत करै।

राजस्थानी लाडेसरां रौ स्वाधीनता आंदोलन में भाग लेवण रौ मूळ कारण वांरी देश भगती रै सागै देश रौ औद्योगिक हित पण ई हौ। विदेशी पूंजीवाद रौ पोषक ब्रिटिश साम्राज्यवाद उगतोड़ा आं भारतीय उद्यमियां रै हाथां अठै रै औद्योगिक विकास में मोटौ रोड़ौ हौ। दोनूं रा हित अेक दूजै सूं विपरीत हा। इण कारण ई राजस्थानी प्रवासियां राष्ट्रीय जन आंदोलन में सक्रिय रूप सूं भाग लियौ।

लिछमी रा लाडेसर राजस्थानी समाज रौ औ त्याग, देश-प्रेम कदैई नीं भुलाईज सकै। पण आ बात घणी अटपटी लागै के स्वाधीनता आंदोलन में इत्तौ जबरदस्त योगदान होवता थकां ई नुंवी पीढी नै इण री कोई जाणकारी कोनी। राजस्थान री पाठ्य पुस्तकां में इणनै कठैई ठौड़ कोनी। इण कानी ऊंडाई सूं सोचीजणौ चाइजै।

मिनखां री माया : रूंखां री छाया

लिछमी रै लाडेसर राजस्थानी समाज नै कड़ी मैणत रै सागै दूरदर्शिता सूं काम करण री जिकी प्रवृत्ति माटी री सौरम रूप में इण धरती सूं मिळी वा इण संस्कृति री खास ओळखाण बणगी, उदाहरणसरूप स्व. घनश्यामदासजी बिड़ला रै आ राजस्थानी कैवत जबान चढियोड़ी ही— 'मिनखां री माया रूंखां री छाया' अर मिनख रै ओळखण री वांनै जबर हथौटी ही। आपरै उद्योगां रौ संचालन करण वास्तै उणां जिण प्रबंधकां अर प्रशासकां रौ चुणाव करियौ, वौ खरौ अर सही निवड़ियौ। इण वास्तै उणां कदैई डिग्री-डिप्लोमा क आपसी संबंधां नै महत्त्व नीं दियौ। वांरी कसौटी माथै जिकौ खरौ उतरियौ, उणनै अपणाय लियौ।

बिड़लाजी रै हाथ सूं टाळनै लियोड़ा रतनां री सूची खासी लांबी है, जिणमें सरब श्री देवीप्रसादजी खेतान, सीतारामजी खेमका, पारसनाथजी सिन्हा, शुकदेवजी पांडे, दुरगाप्रसाद मंडेलिया, डेडराजजी मड़दा, मुरलीधरजी डालमिया, ताराचंदजी साबू, रामलालजी राजगढिया, आसकरणजी अग्रवाल, इंदु पारेख, रामनिवासजी साबूत, रामप्रसादजी पोद्दार इत्याद खास है।

बिड़लाजी आदमी री पारख किण भांत करतां उणरौ अेक दाखलौ इण भांत है— १९२४ में मुरलीधरजी डालमिया आपरै मामा ज्वालाप्रसादजी सागै नौकरी वास्तै बिड़लाजी सामी हाजर हुया। वां री उमर १२ बरस री ही। बिड़लाजी बोल्या— ''इण टाबर रै तौ हाल मूंडै रौ दूध ई कोनी सूख्यौ, इणरी उमर तौ हाल खेलण-खावण री है। इण रौ बेगौ ई इणनै नौकरी रै बंधण में क्यूं नांखौ?'' पण मामा रै आग्रह सूं उणनै जूट मिल में स्टोर कीपर राख लियौ। थोड़ाक दिनां में स्टोर कीपर री शिकायत हुयगी। बिड़लाजी जांच कराई तौ आ जाण पड़ी के सगळी गड़बड़ी पैली वाळै स्टोर कीपर री करियोड़ी ही, मुरलीधरजी रौ कोई दोष नीं हौ।

दो-तीन बरस काम करियां सूं बिड़लाजी वांरै काम सूं घणा संतुष्ट हुया अर वांनै तरक्की मिळती गई। १९३५ में जद बिड़ला कॉटन मिल, दिल्ली रै जनरल मैनेजर री कुरसी खाली हुई तौ लंदन सूं बिड़लाजी तार भेजनै के मुरलीधरजी डालमिया रौ पोस्टिंग कर दियौ जावै। उण वखत बिड़ला जूट मिल, कलकत्ता में मुरलीधरजी केजरीवाल अेक वरिष्ठ अधिकारी हा। इण कारण औ भ्रम हुयौ के केजरीवाल री ठौड़ डालमिया जिसा साधारण अधिकारी नै दिल्ली मिल री जनरल मैनेजरी किंया सूंपीज सकै? इण वास्तै लंदन तार भेजनै इणरी पूछताछ करीजी तौ पाछौ तार सूं पडूत्तर आयौ— 'डालमिया रिपीट डालमिया, नेफ्यू ऑफ ज्वालाप्रसाद।' पडूत्तर सूं दूजा तौ कांई पण मुरलीधरजी डालमिया खुद चकित रैयग्या। पण बिड़लाजी रौ तौ सिद्धांत हो माया मिनखां री छीयां रूंखां री।